तूफ़ान

अर्थात्

शेक्सपीअर कृत टेम्पेस्ट का अनुवाद।

बसन्तमालती, संसारचक्रादि उपन्यासों के रचयिता

पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी कृत।

जिसे

काशी उपन्यासदर्पण के सम्पादक बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्म्मा ने उपन्यास-प्रेमियों के चित्तविनोदार्थ छपवा कर प्रकाशित किया।

THE TEMPEST IN HINDI

BY

PUNDIT J. P. CHATURVEDY

AUTHOR OF

Basant-malati & Sansar-Chakra.

J. Press, Benares City.

प्रथम आवृत्ति १०००] [मूल्य ।)

भूमिका ।

अंग्रेजी के महाकवि शेक्सपीअर ने 'टेम्पेस्ट' नाम का एक सुन्दर छोटा सा नाटक लिखा । लेम्ब साहब ने उस नाटक को सरल सुबोध अंग्रेजी में उपाख्यान बनाया । यह 'तूफान' उसी का हिन्दी अनुवाद है ।

यह मेरी छोटीसी तीसरी भेंट है ।

जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी,
मलयपुर ।

जन्माष्टमी संवत् [illegible]

श्रीगणेशायनमः ।

॥ तूफान ॥

पहिला बयान ।

किसी द्वीप में केवल एक वृद्ध रहता था। इसके एक कन्या भी थी। कन्या सुन्दर और स्यानी थी। वृद्ध का नाम प्रासपीरू और कन्या का नाम मिरन्दा था। मिरन्दा इतनी छोटी यहां आई थी कि उसे अपने पिता को छोड़ और किसी दूसरे मनुष्य का स्मरण तक न था।

ये दोनों पत्थर की बनी हुई एक गुफा में रहते थे। यह गुफा कई कोठरियों में बँटी हुई थी; इनमें से एक प्रासपीरू के पढ़ने का कमरा था। इस कमरे में विशेष कर जादूही की पोथियां थी, क्योंकि उस समय के पढ़े लिखे जादूगरी को अधिक पसन्द करते थे। इसी जादू के प्रभाव से अन्त में प्रासपीरू को बहुत कुछ लाभ हुआ। सिकोरा नाम की एक जादूगरनी ने इस द्वीप को जादू से बांध दिया था। आफत का मारा बिचारा प्रासपीरू भी दैवयोग से यहां आ पहुंचा। मगर इसके पहुँचने के पहलेही सिकोरा पञ्चत्व को प्राप्त होचुकी थी। सिकोरा ने उन भद्र भूतों को जो उसकी दुष्टाज्ञा पालने में सहमत नहीं हुए थे, बड़े बड़े पेड़ों में बांधकर कैद कर रक्खा था। प्रासपीरू ने अपने जादू के बल से उन सभों को कैद से छुड़ाया था। ये भद्र भूत भी सदा प्रासपीरू की आज्ञा में बने रहे। इन सब भूतों का मुखिया एरीयल ही था।

एरीयल चतुरता और चुलबुलाहट में एकही था । यद्यपि वह स्वभाव का बुरा नहीं था, तथापि कालीवन को सताने और दिक करने में उसे बहुतही प्रसन्नता होती थी, क्योंकि वह उसकी पुरानी बैरिन सिकोरा का बेटा था। इसी से उसको कालीवन से द्रोह था। प्रासपीरू कालीवन को जंगल से उठा लाया और उसे बोलना सिखलाया । इसकी सूरत महाभद्दी, कुढंगी, अनोखी और बनमानस से भी गई बीती थी। प्रासपीरू इस पर बहुत दया करता परन्तु इसके उस दुष्टस्वभाव ने जो इसने अपनी माता सिकोरा से ग्रहण किया था इसे अच्छी और उपयोगी बातें सीखने न दीं। इसीसे वह चाकर बनाया गया और लकड़ी इत्यादि ढोने के काम इसे सौंपे गये। इसकी देख भाल के लिये एरीयल ही अफसर बनाया गया।

जब कालीवन सुस्ती करता या काम करने से जी चुराता तब एरीयल जो प्रासपीरू के सिवाय किसी दूसरे को दिखलाई नहीं पड़ता था, चुप चाप आता और उसकी देह में चुटकियां काटता। कभी कीच में उठा कर पटक देता और कभी बनमानस बनकर उसकी ओर मुँह बिराता। कभी चट पट सेह बन कर उसकी राह में लोट जाता और अपने कांटे गिरा देता क्योंकि कालीवन उसके तेज और नुकीले कांटों से बहुत डरता था। जब कभी कालीवन प्रासपीरू के कामों में जरा भी गोलमाल करता तब एरियल उसे इसी प्रकार तंग करता।

इन्हीं सब प्रबल आज्ञाकारी भूतों के प्रताप से प्रासपीरू हवा और पानी पर भी अपनी आज्ञा चला सकता था। एक बार उसकी आज्ञा से भूतों ने एक बड़ा भारी तूफान उठाया। तूफान के उठतेही समुद्र का जल उमड़ने लगा। इस उमड़ते हुए जल में एक

सुन्दर सुविशाल जहाज समुद्र की उत्ताल तरंगों से घोर युद्ध करता तथा डगमगाता दिखलाई पड़ा । वह जहाज जलमग्न हुआही चाहता था कि प्रासपीरू ने उस को दिखला कर मिरन्दा से कहा, " देख इसमें हमी लोगों जैसे जीव भरे हैं । " मिरन्दा बोली " बाबा ! अगर आपने अपने जादूही से भयानक तूफान उठाया है तो इन बिचारों पर दया कीजिये । देखिये, जहाज टुकड़े टुकड़े हुआ ही चाहता है । इन लोगों की नाहक जान जायगी । अगर मुझे सामर्थ होती तो इस जहाज को न डुबाकर समुद्रही को सुखा डालती । "

प्रास०—बेटी घबड़ा मत ! इन लोगों का कुछ नहीं बिगड़ेगा । मैंने ऐसा बन्दोबस्त कर दिया है कि जहाज़ के किसी आदमी को कुछ भी कष्ट नहीं होगा । बेटी जो कुछ मैंने किया है सब तेरी भलाई के लिए । तू यह भी नहीं जानती होगी कि तू कौन है और कहां से आई । मेरे विषय में भी बस तू इतनाही जानती होगी कि मैं तेरा बाप हूं और इस खोह में रहता हूं । अच्छा, यहां आने से पहले की कुछ बातें तुझे याद हैं ? मैं समझता हूँ कि नहीं होगी क्योंकि उस समय तू तीन बर्ष की भी नथी ।

मिर०—जीहां मुझे याद हैं ।

प्रास०—सो कैसे ? किसी ने बतलाया है क्या ?

मिर०—कुछ कुछ सपनासा मुझे याद है । क्या मेरे साथ कभी चार पांच दाइयां नहीं रहती थीं ?

प्रास०—हां रहती थीं—बल्कि इनसे ज्यादे । यह सब बातें अब तक तुझे कैसे याद हैं ? यहां कैसे आई सो तुझे मालूम है क्या ?

मिर०—जी नहीं । इससे ज्यादे मुझे और कुछ भी मालूम नहीं है ।

मास०—मिरन्दा ! बारह वर्ष हुए जब मैं माइलन का राजा था और तू मेरी इकलौती बेटी थी । अन्टानियों नाम का मेरे एक छोटा भाई था जिसका मुझे पूरा भरोसा था। मुझे एकान्त में रहना तथा पढ़ना लिखना कुछ अधिक पसन्द था, इसलिये मैंने सारा राजकाज तेरे काका को सौप दिया । संसार के सब कामों से मन फेर के मैं अपनी किताबों में गड़ गया और सारा समय मानसिक उन्नति में लगा बैठा। इधर अन्टानियो का मन मैला हुआ। प्रजा से हेल मेल बढ़ही गया था । वह मुझे राजगद्दी से उतारने का बांधनू बांधने लगा । नेपल्स के राजा की सहायता से जो मेरा परम शत्रु था उसने अपनी कामना शीघ्रही पूरी करली।

मिरन्दा ने बात काट कर पूछा "उसी समय उन लोगो ने हम दोनों का काम तमाम क्यों नहीं कर दिया ?"

मास०—मेरी प्रजा मुझे इतना चाहती थी कि उनको ऐसा करने का साहस नहीं हुआ । अन्टानियो एक दिन हम को धोखा देकर जलविहार करने के लिये जहाज पर ले गया । जब जहाज बीच समुद्र में पहुँचा तब उसने हमें एक छोटी नाव पर जिसमें पाल पतवार कुछ भी न था, जाने के लिये लाचार किया। मुझे और तुझे मौत की राह बताकर वह अपने घर लौट गया। परन्तु मेरे एक मित्रने जिनका नाम गंजालू था, पहलेही से उस नाव पर अन्न जल के अतिरिक्त उन पुस्तकों को जिन्हे मैं अपने राज्य से भी बढ़ कर समझता था, चुपचाप रख दिया था।

मि०—उस समय मेरे कारण न जाने आप को कितना कष्ट हुआ होगा ?

मास० !—कष्ट ! उस समय तो तू मेरे लिये संजीवनी थी। तेरी मधुर मुसकानही के भरोसे मैंने अपने दुःख के दिन काटे हैं।

जब तक इस उजाड़ टापू में हम नहीं पहुँचे तब तक वह अन्नजल चला। तब से तेरे पढ़ाने लिखानेही में मेरा दिन बीता और तैने भी मेरी शिक्षा से अच्छा लाभ उठाया।

मिर०—ईश्वर आप का भला करे। लेकिन बाबा इस तूफान के सिरजने का क्या कारण है?

प्रास०—अच्छा सुन। इस तूफान के द्वारा मेरा शत्रु नेपल्स का राजा और मेरा बेईमान भाई यहां लाया गया है।

इतना कह कर प्रासपीरू ने धीरे से अपनी जादू की छड़ी मिरन्दा की देह से छुला दी, उसे छुलातेही वह बेहोश होगई।

दूसरा बयान।

मिरन्दा के बेहोस होजाने पर एरियल अपने स्वामी से तूफान का और जहाजवालों का सविस्तर वृत्तान्त कहने के लिये आ पहुंचा। यद्यपि समस्त भूतगण मिरन्दा के सामने सदैव अदृश्यही रहते थे तथापि प्रासपीरू ने उसके समक्ष केवल वायु से वार्त्तालाप करना अच्छा नहीं समझा। अतएव एरीयल के पहुँचतेही प्रासपीरू ने अपनी छड़ी से मिरन्दा को बेसुध करदिया था।

प्रासपीरू ने एरियल से पूछा "ऐ मेरे बहादुर बता तैंने अपना काम कैसे पूरा किया?"

एरीयल!—जब तूफान का जोर बढ़ा और जहाज डगमगाने लगा तब तो मारे डर के जहाज वालों क होश हवास जाते रहे। राजकुमार फरदीनन्द भय से व्याकुल होके सबसे पहले समुद्र में कूद पड़ा और उसका बाप अपने बेटे से निरास होकर छाती पीटने लगा। लेकिन राजकुमार जीता है। वह इस टापू की एक ओर

मन मारे अपने बाप के शोक में (जिसे वह मरा समझता है) बैठा है। एक बाल भी उसका बांका नहीं हुआ है । उसकी शाही पोशाक यद्यपि पानी से भींग गई है तो भी वह पहले की अपेक्षा और भी भड़कदार और चटकीली मालूम पड़ती है।

प्रासपीरू बोला "बस यही मैं चाहता था। प्यारे एरीयल ! जाओ उसे यहां लिवा लाओ। मिरन्डा उसे देखे गी। मेरा भाई और वह राजा कहां हैं ?

एरियल—वे सब तो फरदीनन्द के लिये तड़प रहे हैं । एक आदमी भी जहाज का नष्ट नहीं हुआ है लेकिन हर एक अपने को बचा और बाकी को डूब कर मरा समझ रहा है । जहाज भी एक ठौर ठिकाने से है मगर उनकी नजरों से गायब है।

प्रास०—एरीयल, तैंने यह काम तो ईमानदारी से किया लेकिन अभी बहुत कुछ करने के लिये बाकी है।

एरी०—अब भी बाकी ही है ! याद कीजिये आप ने मुझ से क्या करार किया था ? देखिये कैसी ईमानदारी से मैंने आप के कसे कैसे काम किये हैं। न कभी झूँठ बोला और न कोई भूल की सच्चे दिल से आप की सेवा की है।

प्रास०—बहुत ठीक ! लेकिन क्या तुझे याद नहीं है कि कैसे दुःख से तुझे मैंने छुड़ाया है ? क्या उस महाकंकालिन सिकोरा को भूल गया जो बुढ़ापे और ईर्षा द्वेष के कारण टेढ़ी होगई थी ? वह कहां जन्मी थी बता तो सही ?

एरी०—जी अलजीरिया में।

प्रास०—वह वहीं पैदा हुई थी ? अच्छा तुझे अपनी भी कुछ खबर है कि तू क्या था ? चुड़ैल सिकोरा जिसका नाम लेते डर लगता है, अपनी कुचाल के कारण जब अलीजिरिया से निकली

गई तब मल्लाहों ने उसे यहां ला पटका । तुम लोग भलेमानस थे, उसकी दुष्टाज्ञा पालना स्वीकार नहीं किया तो उसने तुम सब को वृक्षों में बांध दिया जहां तुम्हे मैंने रोते कलपते पाया था । याद करो किस आफत से तुम्हें मैंने बचाया था ।

एरियल ने लज्जित होकर कहा" अब माफ कीजिये—मैं आपका सब कहना मानूँगा ।"

प्रासः—बस यही करो तो तुम्हें मैं छोड़ दूँगा ।

इतना कहने के बाद प्रासपीरू ने, अब उसे क्या करना चाहिये सो सब समझा दिया ।

एरीयल भी उड़नछू होकर जहां फरदीनन्द मन मारे घास पर बैठा हुआ था जाधमका ।

एरीयल ने फरदीनन्द से कहा" राजकुमार ! मैं तुम्हारे विचारों को जल्द बदल दूँगा । राजकुमारी मिरन्दा तुम्हें देखना चाहती है सो चलो । आओ मेरे पीछे पीछे चले आओ ।" इतना कह उसने एक गीत गाया;—"

अगम अगाध उदधि के नीचे पिता तुम्हारा सोता है ।
मोती उसके नयन हुए हैं मूँगा हड्डी होता है ॥
कुछ भी नहीं है बिगड़ा देखो, हुआ समुद्री परिबर्त्तन ।
अजब अनूठा चोखा खासा मानो इसको सत्य बचन ॥
जलदेवी घण्टा घहरावे तेरे बाप का अन्तिम छन ।
तू भी सुनले कान लगाकर होता अब तक टन टन टन ॥"

अपने पिता की यह अनोखी घटना सुन कर वह चौक उठा । एरीयल के शब्द के पीछे पीछे वह "किं कर्तव्य बिमूढ़" होजाने लगा और जाते जाते वहां जा पहुंचा जहां प्रासपीरू मिरन्दा के साथ एक पेड़ के नीचे बैठा था । मिरन्दा ने अपने बाप के अति-

रिक्त कभी किसी दूसरे मनुष्य को देखाही न था। वह फरदीनन्द को आते हुए देख कर उसकी ओर एक टक निहारने लगी।

प्रासपीरू अपनी बेटी की यह दशा देख कर बोल उठा" मिरन्दा! बता क्या देख रही है?" मिरन्दा ने आश्चर्य्य के साथ कहा, बाबा! यह जरूरही कोई देवता है। देखिये, यह कैसा मालूम होता है! यह जरूरही कोई सुन्दर जीव है। क्या यह देवता नहीं है?"

प्रासः—नहीं बेटी, यह खाता है, सोता है और हमी लोगों की तरह इसके सब इन्द्रियां हैं। यह छोकड़ा उसी जहाज में था और मारे फिकर के कुम्हला गया है नहीं तो इसे तू जरूर सुन्दर पुरुष कहती। यह अपने साथियों की खोज में इधर उधर घूम रहा है।

मिरन्दा अब तक यही समझे हुई थी कि सब आदमियों को उसके बाप जैसा गम्भीर चेहरा तथा दाढ़ी मूँछें पक्की हुई होती हैं परन्तु इस युवा के सुन्दर मुखमण्डल को देखकर वह बहुतही प्रसन्न हुई। इधर फरदीनन्द ने सुन्दरी मिरन्दा को देखकर तथा एरीयल की अनूठी आवाज सुनकर और अपने को जादू के टापू में समझा मिरन्दा को इस ठौर की अधिष्ठातृ देवी। फरदीनन्द ने मिरन्दा से पूछा" आप कौन हैं—देवी या किन्नरी?"

मिरन्दा ने डर कर जवाब दिया" न मैं देवी हूँ और न किन्नरी। मैं तो एक साधारण नारी हूँ।" वह और भी कुछ कहा चाहती थी, परन्तु उसके पिता ने ऐसा करने से उसे रोक दिया मगर मनही मन वह इन दोनों की बातें सुन कर बहुतही खुश हुआ; क्योंकि वह भलीभांति समझ गया कि ये दोनों चार आंखें होतेही एक दूसरे पर मोहित हो गये हैं। किन्तु फरदीनन्द

की दृढ़ता जाचने के लिये उसने उन दोनों के बीच कुछ बाधा डालनी चाही। इस लिये प्रासपीरू ने आगे बढ़ कर रुखाई के साथ राजकुमार से कहा "तू भेदिया बनकर मेरा भेद लेने आया है। अच्छा, चल तुझे मैं इसका मजा चखाता हूं—हाथ पैर बांध दूंगा—समुद्र का खारा जल पीने के लिये तथा घास पात खाने के लिये दूंगा।"

फरदीनन्द तलवार निकाल कर बोला" नहीं ऐसा कभी नहीं होने पावेगा। हां मुझ से कोई जबरदस्त आवे तो अलबत्ते मैं इन बातों को मान सकता हूं।" प्रासपीरू ने अपनी छड़ी को हिलाकर उसे जहां का तहां अचल कर दिया। बस वह बिचारा एक डग भी आगे न बढ़सका।

मिरन्दा पिता के गले में हाथ डालकर बोली बावा! आप ऐसे कठोर क्यों होगये? इस पर दया कीजिये। इसकी जमानत मैं करूंगी। बस यही दूसरा आदमी है जिसे मैंने देखा है—यह सच्चा मालूम पड़ता है।"

प्रास०—चुपरह-खबरदार जो फिर बोली। ठगों के लिये शिफारिस कैसी? सिर्फ कालीवन को देखकर समझती है कि दुनियां में अब इससे बढ़ कर कोई सुन्दर ही नहीं है। जैसे यह कालीवन से सुन्दर है वैसेही इससे भी सुन्दर आदमी संसार में बहुत पड़े हैं।

अपनी कन्या की केवल दृढ़ता जांचने ही के लिये उसने ऐसा कहा था। मिरन्दा बोली "मेरा प्रेम बड़ा सरल है। इससे सुन्दर आदमी देखने की मुझे अब लालसा नहीं है।"

प्रास०—(फरदीनन्द से) आमेरे साथ चल मेरी बात उठाने की तुझमें शक्ति नहीं है। "बेशक नहीं है" कहता हुआ फरदी-

नन्द उसके पीछे पीछे जाने लगा, किन्तु उसे कुछ भी मालूम नहीं हुआ कि क्यों उसकी सब शक्तियां एक दम बेकाम हो गईं। जाने के समय वह फिर फिर कर मिरन्दा की ओर निहारता जाता था। गुफा में जाने के समय उसने मन में कहा "अगर इस सुन्दरी को दिनभर में एक बेर भी देखपाता तो इन सब दुःखो की मुझे कुछ परवाह न थी।"

प्रासपीरू ने उसे बहुत देर तक बन्द नहीं रक्खा। थोड़ी ही देर के बाद उसे बाहर निकाला और लकड़ियां चुन चुन कर ढेर लगाने के लिये कहा। इसके पश्चात् वह पढ़ने के लिये अपने कमरे में चला गया।

तीसरा बयान।

फरदीनन्द प्रासपीरू की आज्ञानुसार लकड़ियां बीनने लगा। मगर राजकुमारों को इन कामों का अभ्यास कहां ? विचारा थोड़ी ही देर में थक कर बैठ गया।

मिरन्दा से राजकुमार का कष्ट देखा नहीं गया। वह राजकुमार से बोली "आप इतनी मिहनत न करें। बाबूजी अभी पढ़ते हैं, वे अभी दो तीन घन्टे नहीं आवेंगे-तबतक आप जरा आराम करलें।"

फरदी०—आराम करने की मुझ में सामर्थ नहीं है। आराम करने से पहले मैं अपना काम पूरा करूँगा।

मिरन्दा ने कहा आप बैठ जाइये मैं आपका काम किये देती हूँ।" किन्तु वह इस पर किसी तरह भी राजी नहीं हुआ। शेष में सहायता के बदले मिरन्दा उसके काम में बाधा डाल बैठी, क्योंकि

उसने एक ऐसी लम्बीगप निकाली जिससे लकड़ी चुनने का काम एक दम सुस्त पड़ गया।

प्रासपीरू ने केवल प्रेम की परीक्षा करनेही के लिये राजकुमार को इस काम में लगाया था। अतएव वह छिप कर इन दोनों की बातें ध्यान से सुन रहा था।

फरदीनन्द ने पूछा "प्यारी, तुम्हारा नाम क्या है ?"

मिर०—प्यारे, पिताजी ने आपसे बोलने के लिये मना कर दिया है, लेकिन क्या करूं ? न जानें क्यों आप को बिनादेखे या आपसे बिना बोले मुझ से रहा नहीं जाता। पिता के मना करने पर भी मैं बतादेती हूं कि मेरा नाम मिरन्दा है।

प्रासपीरू मिरन्दा की इस अवज्ञा से रुष्ठ न होकर और भी मन ही मन सन्तुष्ठ हुआ क्योंकि उसने अपने (जादू) के प्रभाव से उसको ऐसा मुग्ध करदिया था कि वह देखते ही फरदीनन्द पर मोहित होगई और पिताकी आज्ञा सब भूल बैठी। प्रासपीरू के आनन्द की मात्रा तब और भी बढ़ गई जब उसे पूर्णरूप से निश्चय हो गया कि राजकुमार भी अपना मन मिरन्दा पर बार चुके हैं।

फरदीनन्द ने मिरन्दा की घनी प्रशंसा करते हुए कहा "प्यारी ! वास्तव में तू बड़ी सुन्दर है यदि मेरा बस चलता तो तुझे मैं सब सुन्दरियों की रानी बनाता" मिरन्दा बोली मैंने पिता के और तुम्हारे सिवाय कभी किसी मर्द या औरत को देखा ही नहीं है। इस संसार में और कैसे कैसे जीव हैं सो मैं नहीं जानती परन्तु विश्वास कीजिये कि मैं आपको छोड़ किसी दूसरे को अपना साथी बनाया भी नहीं चाहती और न अब किसी दूसरे की मूर्ति मेरे चित्त में पैठ सकती है। राम ? राम ? आज मुझे क्या होगया है ! बड़ी निडर होकर बोल रही हूं, पिता की सब बातें भूल गई।'

प्रासपीरू यह सुनकर हँसा और सिर हिलाकर मानो मनमें कहने लगा "बस जो मैं चाहता था वही अब हुआ चाहता है। मिरन्दा अब जरूर नेपल्स की रानी होगी।"

फरदीनन्द ने अपनी मीठी मीठी बातों में मिरन्दा को यह भी जतादिया कि वह नेपल्स का राजकुमार है और उत्तराधिकारी भी है। और वह उसे वहां की रानी बनाना चाहता है। मिरन्दा ने कहा "जिसकी चाह है वह पास है फिर रोना कैसा? मैं आपसे साफ साफ कहती हूं कि मैं आपकी सबतरह से दासी हूं।"

फरदीनन्द इस के जवाब में कुछ कहाही चाहता था कि प्रासपीरू ने प्रगट होकर कहा "बस बहुत हुआ? डरोमत तुम दोनों की सब बातें मैंने सुनी है और पसन्द की हैं। फरदीनन्द? अगर तुम्हारे साथ मैं बुरे तौर से पेश आयाहूं तो क्या हुआ? लो यह अपना कन्यारत्न तुम्हे सौंप कर अपने पाप का प्रायश्चित करता हूं। ये सब प्रपंच केवल तुम्हारी प्रेम-परीक्षा ही के लिये थे सो तुम भली-भांति कृतकार्य्य हुए। अब उपहारस्वरूप यह कन्या तुम्हें देताहूं। अगर मैं अपनी कन्या के रूप गुण का घमण्ड करूं तो तुम मत हँसो। अच्छा, मैं आताहूं, तब तक तुम दोनों बात चीत करो।" इतना कह के वह चला गया।

चौथा बयान।

प्रासपीरूने वहां से हट कर एरीयल को बुलाया। वह भी चट पट आपहुंचा और आज्ञा पाकर यों कहने लगा "महाराज? जहाजवाले सब तो हमारी आश्चर्य्यमय लीलाओं को देख देख कर पागल से हो गये हैं। जब वे सब घूमते घूमते थक गये और भूख

से बेचैन हो तड़पने लगे तव उनको कुछ दूर पर खाने पीने की सुन्दर और स्वादिष्ट चीजें नजर आईं। वेसब बड़े आनन्द से खाने के लिये दौड़े। लेकिन ज्यों ही कि उन लोगों ने हाथ बढ़ाया वह सब चीजें तो गायब होगईं और सामने एक भयङ्कर राक्षस मुँह बाये खड़ा है। फिर उसी राक्षस ने उनको पिछली बातों की याद दिलाई और कहा देखो! तुम लोग कैसे दुष्ट और अन्यायी हो। प्रासपीरू का राज्य छीनकर उसे और उसकी बेटी को घर से निकाल बाहर किया, बस उसी पाप के ये सब फल हैं।' इस कहने का असर उनके चित्त पर हुँआ—वेसब अपने किये पर बहुत रोये और पछताये। उनकी दशा देख अब मुझे दया आती है।"

प्रासपीरू बोला "तो जा उनको जल्द लिवाला। जब तुझ भूतको दया आती है तो क्या मुझ मनुष्य को न आवेगी? जरूर आवेगी। मेरे प्यारे एरीयल, जा अब उन्हें जल्द लिवाला।"

एरीयल् गया और अपने गीत के द्वारा उन लोगों को गंजालू समेत प्रासफीरू के पास लिवा लाया। यह वही गंजालू है जिसने अन्न जल और पुस्तकों से प्रासपीरू की सहायता की थी।

शोक और दुःख से वे ऐसे कातर हो रहे थे कि वे प्रासपीरू को एका एक पहचान न सके। पीछे उन लोगों ने जाना कि यह वही प्रासपीरू है जो माइलन से निकाला गया था। प्रासपीरू सबसे पहले अपने रक्षक बृद्ध गंजालू से मिला। फिर अन्टानियो ने आंखें डब डबा कर अपने भाई से क्षमा प्रार्थना की और नेपल्स के राजा ने बहुत कुछ पश्चाताप किया। प्रासपीरू ने भी सब को क्षमा करके गले लगाया। निपल्स के राजा ने प्रासपीरू का राज्य लौटा देने की प्रतिज्ञा की। तब प्रासपीरू ने कहा "अच्छा तो देखिये आप के लिये भी मेरे पास उपहार है।" फिर परदा उठा

कर शतरंज खेलते हुए मिरन्दा और फरदीनन्द को दिखला दिया।

इस अचिन्तनीय सन्मिलन से पिता पुत्र को निर्वचनीय आनन्द प्राप्त हुआ क्योंकि दोनों ही दोनो को डूबा हुआ समझकर निरास हो चुके थे।

मिरन्दा आश्चर्य्य से बोल उठी" अहा! ये कैसे सुन्दर हैं! यह संसार जरुरही कोई विचित्र ठोर है, जहा ऐसे सुन्दर जीव रहते हैं।"

नेपल्स का राजा भी अपने बेटे की तरह मिरन्दा की सुन्दरता देख आश्चर्य्यान्वित हो बोल उठा" यह सुन्दरी कौन है ? यह यहां की अधिष्ठात्री देवी मालूम होती है, जिसने हम सब को अलग करके फिर मिला दिया है।"

फरदीनन्द बोला" नहीं पिता, यह भी जन्म मरण सील जीव है, किन्तु उस अजन्मा के अनुग्रह से अब यह मेरी है। अब जीवित नहीं हैं यह सोच कर आपकी आज्ञा के बिनाही मैं इसे पसन्द कर चुका हूँ। यह माइलन के राजा प्रासपीरु की कन्या है, जिनका नाम तो बहुत दफे सुना था लेकिन दर्शन का संयोग आजही लगा है। इन्हीं की कृपा से आज मेरे प्राण बचे हैं। अपनी कन्या को देकर अब ये मेरे द्वितीय पिता (ससुर) हुए।

नेपल्स का राजा०—इस हिसाब से तो मैं भी इस (मिरन्दा) का बाप हुआ इस लिये बेटी से क्षमा मांगना उचित नहीं।

प्रास०—निसन्देह। अब इन बातों को जाने दीजिये, बीती ताहि बिसार दे इत्यादि। (फिर अपने भाई को हृदयसे लगाकर) यह सब उसी परमात्मा के खेल हैं जिसने इस अखिल ब्रह्माण्ड को बनाया है। यदि मैं अपने राज्य से निकाला न जाता तो मिरन्दा किस प्रकार नेपल्स की रानी होती? इस लिये जो हुआ सो अच्छाही हुआ।

प्रासपीरू की बातें सुनकर अन्टानियो दुःख और लज्जा से रोने लगा। बूढ़े गंजालू ने इस आनन्द सम्मिलन से पुलकित हो नई जोड़ी के आनन्द और दीर्घजीवन के लिये परमात्मा से प्रार्थना की।

तदुपरान्त प्रासपीरू यों कहने लगा" जहाज और जहाज के सब लोग कुशल से हैं। कल सबेरे मैं अपनी कन्या के सहित आप लोगों के साथ घर चलूँगा। जो कुछ फल मूल मेरे इस दीन कुटीर में है उसे आज आप लोग ग्रहण करें। सांझ को अपनी राम कहानी सुनाऊंगा।

इतना कह कर प्रासपीरू ने कालीवन को बुलाया और उससे कमरों को ठीक ठक करने के लिये तथा भोजन की सामग्री जुटाने के लिये कहदिया। कालीवन की विचित्र आकृति देख कर सब घबड़ा उठें। तब प्रासपीरू ने कहा" जनाब, घबड़ाते क्यों हैं? मेरे सब काम तो इसी से चलते हैं।"

प्रासपीरू ने माइलन प्रस्थान करने से प्रथम ही एरियल को अपने काम से पृथक किया। ईमानदार एरीयल भी जो स्वाधीनता के लिये तथा स्वेच्छा पूर्व्वक पक्षियों की तरह आकाश में, पत्तियों में सुगन्धित फूलों में और फलों में उड़ने के लिये बड़ाही उत्कंठित था, प्रसन्न हुआ।

मुक्त करने के समय प्रासपीरू ने कहा" मेरा प्यारा एरिएल! यद्यपि तेरे जाने से मुझे कष्ट होगा तथापि तुझे आज छोड़ता हूँ।"

एरियल बोला" इस लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं लेकिन मेरी एक बिनती और है। मैं चाहता हूं कि आपके जहाज को अनुकूल वायु के साथ आप के घर पहुँचा दूं। प्रभो! जब मैं स्वाधीन हूंगा तौ कैसे आनन्द से मेरी कटेगी!" फिर एरियल नें एक गीत गाया:—

गीत।

खुशी खुशी अब नाचेंगे हम।
जहां जहां मधुमक्खी बैठे,
तहां तहां अब बैठेंगे हम।
रात समय जब उल्लू बोले,
चुन चुन कलियां सोवेंगे हम।
ग्रीष्म गये चमगादर ऊपर,
इधर उधर अब डोलेंगे हम।
खिली खिली कलियों के भीतर,
मुदित चित्त अब रहेंगे हम।

फिर प्रासपीरू ने अपनी जादू की किताबों को और छड़ी को जमीन में गाड़ दिया और फिर इन्हें काम में नहीं लाने की प्रतिज्ञा की। अपने शत्रुओं को जीतने पर तथा उनसे मेल हो जाने पर जब प्रासपीरू को जन्मभूमि देखने, अपना राज्यपाने, फरदीनन्द के साथ मिरन्दा का व्याह देखने के अतिरिक्त और कोई आनन्द बर्द्धक कार्य्य शेष न रहा तब वह दलबल समेत एरीयल की रक्षा में कुशल पूर्व्वक माइलन जा पहुँचा।

इति।

पढ़ने योग्य उपन्यास।

जादूगर चारो भाग १॥)
मायाविलास २ भाग ॥)
मयंकमोहनी ॥)
महारानी पद्मावती ।)
शोरीसरहद ≡)
डांकू उपन्यास =)॥
कुलीन कन्या ।)
मोहनी चरित्र ॥=)
हीरे का मोल ।)
बीरचरितावली ।=)
लैलेमजनू =)
राजकुमार ≡)
घराऊघटना ।)
भयानकभ्रमण ॥)
कमलकुमारी ४ भाग २)
भूतों का मकान ॥)
मालती बसन्त -)
सुन्दरी उपन्यास ≡)
बड़ाभाई ॥=)
सासपतोहू ॥)
प्रेममई ≡)
लीलावती १)
पूंगनिरूपण -)
नरपिशाच ॥)
मनोरमा ॥=)
तारा उपन्यास १)
प्रवीन पथिक १।)
दीनानाथ ।-)
जया ॥)
परीक्षागुरु ॥।)

रणधीरप्रेममोहनी ।)
सरस्वती १)
राजहैरत उर्दू ॥।)
हरीफउर्दू ≡)
जमना का खून ।)
गोलकधंधारी ॥)
ईला उपन्यास ॥=)
प्रमिला ॥=)
दलितकुसुम ।=)
मीराबाई चरित्र =)
कमलिनी ।)
कुलटा =)
ठगवृतान्तमाला ३)
स्वर्णलता ॥)
काजरकीकोठरी ॥=)
आश्चर्यप्रदोप -)
भारत जननी =)
नीलदेबी ≡)
काश्मीरकाइतिहास ॥)
प्रतापसिंह ॥।)
पुलिसवृतान्तमाला ॥)
ईश्वरीलीला =)
शिवाजी चरित्र ।)
मधुमालती ॥)
चितौरचातकी ॥।)
राजकुमार ॥)
कुसुमलता २।)
मायाबिनी ।)
बङ्गबिजेता १)
चन्द्रकला ।)

पावसप्रवीन

पावस में पावस प्रवीन, ल्यो यह गावो ग्रन्थ नवीन। वर्षा ऋतु में गाने योग्य बहुतही उत्तम पुस्तक है -)॥

गाने की पुस्तकें

गोविन्दलहरी ।)
अनुरागलतिका ।=)
प्रेमरसामृत ।)
रसलहरी ।≡)
सदाबहार ≡)
प्रेमपत्रिका ।)
गायन संग्रह ।-)
चमनिस्तान हमेशा बहार चार भाग १)
नई बहार होली ।)
मौसिमबहार ≡)
भजनरामायण =)
सूररामायण ॥)
गुलजारपुरबहार ।=)
रसबर्सात ≡)
मीराबाई के भजन =)
प्रेमतरंग ।)
लावनी ब्रह्मज्ञान ।)
दिल बहलाव =)
सावनसुहावन -)॥

पता—
विश्वेश्वर प्रसाद वर्म्मा
उपन्यासदर्पण—काशी।